शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 14
Issue 1&2
151July 2023

वाल्मीकि के काव्य का सांस्कृतिक प्रभाव

बीज शब्द :

वाल्मीकि, रामायण, राम, कविता

इस शोध पत्र में वाल्मीकि में काव्य चेतना स्फुरण , उनके प्रकृति प्रेम, विश्व भूगोल समाज,राजनीति ,धर्म, शिक्षा, कला कौशल, विज्ञान, उनके जातीय पहचान उनके द्वारा रचित रामायण का सांस्कृतिक प्रभाव समूचे एशियाई देशों पर पड़ना वाल्मीकि आश्रम प्रत्यभिज्ञान के परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला गया है।

*****

डॉ० रामबिहारी उपाध्याय,
अध्यक्ष
कोशल शोध संस्थान बौराँव
आम्बेदकर नगर, उ0 प्र0

वाल्मीकि के काव्य का सांस्कृतिक प्रभाव

(यह शोध पत्र, प्राचीन भारतीय इतिहास,पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग- गोरखपुर विश्व विद्यालय, भारतीय पुराण संस्थान, नई दिल्ली, भारतीय इतिहास संकलन समिति वाराणसी के तत्वा वधान में 12-13 अगस्त,2017 को आयोजित' रम्या रामायणी कथा के राष्ट्रीय अधिवेशन में गोरखरपुर वि0वि0 गोरखरपुर में प्रस्तुत किया गया था।)

मैं रम्या रामायणी कथा के राष्ट्रीय अधिवेशन के आयोजकों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने इस विद्वत्समाज में मुझे बोलने का अवसर दिया। कोशल की तमसा आज सूनी-सूनी सी विह्वव्ल मन से बलखाली सी प्रवाहित हो रही है, मानों आदि कवि वाल्मीकि के चिर वियोग को सहते सहते उस रूपसी ने प्राकृतिक सुषमा को खोकर वैराग्य धारण किया हो। क्रौंच वध का वह दृश्य, आदि कवि का 'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीसमा यत्क्रौंच मिथुना देकं वधी काममोहितम् पहला छन्द भारतीय साहित्य के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा। महामुनि वाल्मीकि ने अपनी कलात्मक तथा सशक्त अभिव्यक्ति की तूलिका से सर्ग, राजवंशावलियॉ, लौकिक तथा अलौकिक प्राणी, तोता, मैना, हंस, मोर, हाथी, घोड़ा, बैल, शेर, जैसे पंशु-पक्षी, चम्पा, कमल, कनेर, गुलाब, जुही, जैसे फूल, आम, जामुन, कटहल, नीम, बबूल, कैत्थ, बेल, बरगद, जैसे वृक्षों, हिमालय, विन्ध्य, सहयाद्रि, त्रिकूट जैसे पर्वतों, सरयू, गंगा, यमुना, गोमती, गोदावरी, जैसे नदियों, काशी, मिथिला, श्रावस्ती, अयोध्या, किष्किन्धा, श्रृंग्वेरपुर जैसे नगरों की रमणीक प्राकृतिक छटा का मनोहरी वर्णन करके नगर विन्यास को उजागर किया है। वास्तविकता तो यह है कि मानवजीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं जिसका चित्रांकन रामायण में न किया गया हो। कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं जिसका प्रतिपादन रामायण में न किया गया हो। उनके द्वारा रचित रामायण में विश्व भूगोल, राजनीति, समाज, धर्म, दर्शन, आर्थिक दशा, शिक्षा, कला, वस्तियों का स्वरूपः राजमहल, उद्यान, खेत से लेकर मुनियों के पर्ण कुटियों के मनोहारी स्वरूप को पुरातत्व वेत्ता एम.सी.[3] जोशी सत्य मानते है। यद्यपि प्राचीन भारतीय महापुरुषों के समान वाल्मीकि के प्रारम्भिक जीवन एवं क्रिया कलापों की स्पष्ट रूपरेखा साहित्य में मुखरित नहीं हो पायी है यथापि वैदिक साहित्य, पुराणों रामायण, महाभारत में भिन्न-भिन्न वाल्मीकि का स्मरण किया गया है तैतिरीय प्रातिशारव्य में एक वैयाकरण वाल्मीकि[4] का उल्लेख मिलता है बेवर तथा याकोबी जैसे मनीषियों ने संदर्भित स्थलों में चर्चित वाल्मीकि को आदि कवि वाल्मीकि माना है। मगर वैदिक साहित्य में वाल्मिक नामोंल्लेख से वाल्मीकि को वैदिक युगीन वैसे ही नहीं माना जा सकता है जैसे

ऋग्वेद में रघु, दशरथ, राम, जैसे पात्रों का उल्लेख मिलता है, किन्तु कालक्रम में इन्हे वैदिक युगीन नहीं माना जा सकता है। रामायण में महामुनि वाल्मीकि का विवरण मिलता है। महाभारत के उद्योग पर्व से विदित होता है कि वाल्मीकि कर्म से क्षत्रिय थे। उन्होने शिव की शरण ली थी। मगर द्रोण पर्व और शांति पर्व के अनुसार वे कवि थे। इससे भी युक्ति संगत बात यह है कि महाभारत के कतिपयस्थलों पर महर्षि 5 वाल्मीकि का बड़े ही आदर के साथ स्मरण किया गया है। जिससे आदिकवि वाल्मीकि तथा महर्षि वाल्मीकि का तादात्म्य स्थापित किया जा सकता है। वाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है कि वाल्मीकि दशरथ और राम के समकालीन थे, जैसा कि उत्तर काण्ड के अनुसार लक्ष्मण, परित्यक्ता सीता को वाल्मीकि आश्रय के पास जंगल में छोड़ते समय सीता को समझाते हुए कहते है, वाल्मीकि के यहॉ आश्रय लेना, वे ब्राहमण तथा दशरथ के सखा है। 6 वाल्मीकि रामायण अन्तस्साक्ष्यों से पता चलता है कि वे भार्गव गोत्रीय ब्राहमण थे। उनके भार्गव गोत्रीय होने की पुष्टि विष्णुपुराण, 7 मत्स्य भागवत पुराण, और कुमार सम्मव से भी की जा सकता है। वाल्मीकि के प्रारम्भिक जीवन की घटनाओं का वर्णन अध्यात्म 8 रामायण और स्कन्द पुराण में निरूपित है। ध्यातव्य है कि वाल्मीकि जन्म से ब्राह्मण थे। किन्तु निरन्तर किरातों के साथ रहने से तथा चोरी करने से इनका ब्राह्मणत्व नष्ट हो गया था। सप्तर्षियों के प्रेरणा से उन्हें ज्ञान हुआ। वाल्मीकि के डाकू होने की पुष्टि तत्वसार संग्रह, आनन्द रामायण और कृति वासीय रामायण से भी की जा सकती है। कतिपय विद्वानों के अनुसार पुराणों में प्राप्त कथाओं के आधार पर वाल्मीकि नीच जाति के है किन्तु उक्त मतअन्याय संगत प्रतीत होता है क्योंकि ज्यों-ज्यों राम भक्ति सम्प्रदाय का विकास होने लगा त्यों-त्यों वाल्मीकि विषयक वृतान्त 9 राम नाम के गुणगान में परिणत होता गया। वाल्मीकि की प्रतिष्ठा इतनी बढ़ी कि उन्हें न केवल ब्राह्मण ही वरन वेदव्यास क छब्बीसवॉ अवतार, प्रचेतस का दसवॉ पुत्र यहॉ तक कि उन्हें विष्णु का अवतार माना जाने लगा। वाल्मीकि की शिष्य परम्परा काफी बढ़ी थी किन्तु उसमें भरद्वाज प्रमुख थे। एकबार ये भरद्वाज के साथ तमसामें स्नान करके वापस आ रहे

थे। मार्ग में इन्होनें मैथुनासक्त कौंच पक्षियों में से एक पर बाण चलाते हुए वहेलिया को देखा। उस समय पक्षी की दयनीय दशा को देखकर इनके मन में दया आयी। उसी समय उनके मुख से छन्दोवद्ध आर्त वाणी-मा निषाद प्रतिष्ठा फूटी जो विश्व की पहली कविता बनी। इस घटना से वे दुखित होकर बैठे थे, उसी समय वहॉ ब्रहमाजी प्रकट हुये। ब्रहमा ने कहा-मत पछताओ। यह श्लोक तुम्हारी विमल कीर्ति फैलायेगा। इसी छन्द में राम के चरित की रचना करों। ब्रहमा के आदेशानुसार वाल्मीकि ने 24000 श्लोकों से गौरवान्वित रामायण की रचना किया। पुरातत्ववेता एम सी जोशी के अनुसार वाल्मीकि के राम विष्णु आदि देव हरि और नारायण है तथा ब्रहमा श्रेष्ठ हैं। वाल्मीकि ने राम का निषाद, कोल,भील, रीक्ष, वानर, शवर और राक्षसों से प्रेम प्रकट करके सामाजिक एवम् सांस्कृतिक सहिष्णुता का अमर संदेश दिया है। इस प्रकार वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के सम्बन्ध में त्रिविक्रम भट्ट के कथन रम्या रामायणी कथा की सम्पुष्टि वाल्मीकि द्वारा वर्णित रमणीक श्रावस्ती और सुरम्य अंगदीया नगरों के संरचना से भी होता है।त्रिकालज्ञ वाल्मीकि लौकिक काव्य के जनक थे। वे काव्य के साथ -साथ इतिहास, पुराण, ज्योतिष, राजनीति, अर्थशास्त्र, आन्वीक्षिकी और संगीत जैसे विघाओं के ज्ञाता थे। उनका आश्रम शिष्य मण्ड लियों से सुशोभित रहता था। उन्होंने कुश और लव को रामायण गेय शैली में पढ़ाई थी। वे अपने आश्रम के कुलपति थे। राजपूत युगीन कवि भवभूति के उत्तर राम चरितम से पता चला है कि वाल्मीकि आश्रम में आत्रेयी भी पढ़ती थी। जिससे ज्ञाता होता है कि वाल्मीकि सहशिक्षा के सर्मथक रहे है। तभी तो उनके रामायण के उच्च घराने की कौशल्या, सीता जैसी नारियॉ सुशिक्षित रही होगी। वाल्मीकि से प्रभावित होने के फलस्वरूप ही कालान्तर में भास, कालिदास, कुमार दास, भवभूति,जयदेव, मुरारि, मध्ययुगीन भारत के प्रान्तीय भाषा के कवियों और तुलसीदास जैसे कवियों ने संस्कृत-कन्नड से कश्मीरी और हिन्दी में राम काव्य लिखे। कोशल का सांस्कृतिक वैभव झांकने से ज्ञात होता है कि वाल्मीकि, रामायण ,राम और अयोध्या का प्रभाव समूचे एशिया महाद्वीप पर पड़ा है, तभी तो भारत के प्राचीन कलाकृतियों: अपसद देवगढ़ नचनाकुठार, ऋंग्वेरपुर, श्रावस्ती, भीतरगॉव, भारत कलाभवन, कोणार्क, कौशाम्वी, सिंहनाथ, एलौरा की गुफाओं, पेरूम्वन और तंजौर से प्राप्त भित्ति चित्र,मूर्तिशिल्प में रामजन्म, रामविवाह,अहिल्योद्धार, राम का गंगा पार होना भरद्वाज, आश्रम,चित्रकूट, में राम- भरत मिलन, सुग्रीव मिलन, लक्ष्मण मूर्च्छा और सुन्दर पाण्डय के सिक्के पर उत्कीर्ण राम की लंका विजय जैसी घटनाओं का पुरातात्विक अंकन मुखर हो उठा है। दक्षिणपूर्वीएशियाईदेश: वर्मा, चम्पा, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, कोरिया, इण्डोनेशिया, वियतनाम, जावा, सुमात्रा,और बाली के साहित्य और प्राचीन कला में वाल्मीकि रामायण से मिलते नाना प्रसंगो के उकेरने से भी इस भूभाग में वाल्मीकि की लोक प्रियता का उद्‌बोध होता है। चम्पा 10 राज्य के सातवी शदी के राजाप्रकाशधर्म के शिलालेख से ज्ञात होता है कि चम्पा राज्य में वाल्मीकि और उनका रामायण काफी लोक प्रिय रहा है। यहॉ तत्कालीन स्थापित वाल्मीकि मन्दिर में हजारों वर्ष पहले की बनी वाल्मीकि की मूर्ति और किष्किन्धा काण्ड में वर्णित उनका विश्व भूगोल ज्ञान उनके अर्न्तराष्ट्रीय महत्व को प्रतिपादित करता है। ऐसे महामुनि वाल्मीकि के आश्रम के भौगोलिक प्रत्यभिज्ञान को लेकर प्राचीन भूगोल के विद्वानों में मत भेद रहा है। वाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है कि कौ चवध के समय वह तमसा तट पर निवास कर रहे थे। क्योंकि प्रात: काल ही तमसा स्नान के बाद कुछ ही चलने पर उन्होंने कौ चवध दृश्य देखकर दुनिया की पहली कविता 'मा निषाद'... पढ़ी। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार वाल्मीकि आश्रम गंगा पार था। रघुवशं और उत्तर राम चरित जैसे ग्रंथो में भी वाल्मीकि आश्रम गंगा पार दर्शाया गया है।

ए.सी. दास,11 रमेश चन्द्र दत्त,12 जे.टी. बी. हवीलर13 और कृष्णदत्त, वाजपेयी14 जैसे विद्वानों ने चित्रकूट में वाल्मीकि आश्रम माना है। शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने विठूर, किशोरी लाल गुप्त ने सीता मढ़ी, डॉ0 रामकुमार दास ने अनिन्दिता ग्रन्थ में सीता वटी (राजस्थान) हृदय शाह राजधानी (मण्डला) कुसुम्मी (उन्नाव) पौड़ी, राची (झारखण्ड) अमृतसर, भैसालोटन (बिहार) नेपाल, भुइयारानी(हमीरपुर) में वाल्मीकि आश्रम विभिन्न विद्वानों द्वारा खोजित15 कहा हैं। सी.वी. वैद्य ने उन्हें अयोध्या के पश्चिमोत्तर का निवासी स्वीकार किया है। गिरीश चन्द्र अवस्थी, डी.सी. सरकार और मेरी नूतन खोजों से फैजाबाद जिले की तमसा ही रामायण कालीन तमसा 16 है। इसके तट पर ही वाल्मीकि आश्रम अवस्थित रहा होगा। अन्त में मै त्रिविक्रम भट्ट को याद करते हुए राष्ट्रीय अधिवेशन के महामन्त्री तथा उपस्थित प्रतिभागियों को जिन्हों ने मुझे ध्यान पूर्वक सुना हो हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

.....शेष पृष्ठ 41 पर

गीतों की सुन्दरता बढ़ जाती है। जिसमें अलंकार की कमी लेकिन रसों की व्यंजना विशेष रूप से समाहित हो उठती है।[13]

निष्कर्ष:

भारतीय संस्कृति की सतत् धारा वैदिक काल से आज तक नित्य विकास करती हुई अनेकानेक उपलब्धियों की धात्री है। आज भी उसमें वह शक्ति है। हमें अपनी संस्कृति के जानना है उसके अनुसार आचरण करना है। लोक संस्कृतियों के माध्यम से अभी हमारी बहुत सारी धरोहरें जीवित, पुष्पित-पल्लवित हैं। हमारे पर्यावरण को हमारे जीने का तरीका एवं सजगता ही बचा सकती है। आस-पास के वातावरण को जीवंत रखने के लिए पर्यावरण के साथ ही साथ लोकपर्व और लोक संस्कारों को बचाए रखना अति आवश्यक है। तभी हम और हमारी भावी पीढ़ी, व जीव, जन्तु, पशु-पक्षी सुरक्षित रह सकेंगे।

संन्दर्भ सूची -

1-ऋग्वेद 10.90.12
2-अर्थव वेद पृथ्वी सूक्त
3-हिन्दूधर्म जीवन में सनातन की खोज विद्यानिवास मिश्र पृष्ठ संख्या 67-69
4-भारतीय धर्म और संस्कृति राम जी उपायाय पृष्ठ संख्या 112
5-शर्मा डा0 मृत्युंजय, त्रिपाठी राम नारायण, संगीत मैनुअल पृष्ठ 84-89
6-टाक सिंह डा0 तेज, सुबोध संगीत शास्त्र पृष्ठ -2
7-शर्मा भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ-14
8-शर्मा भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ-66
9- डा0 ठाकुर जयदेव सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास पृष्ठ-106
10- यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 17
11-स्कंदपुराण नागरखंड 247/41-42, 44
12- देवेन्द्र सत्यार्थी धरती गाती है - पृष्ठ 134
13-रात नरेश त्रिपाठी कवित कौमुदी ग्राम गीत पृष्ठ 78

डॉ रेखा त्रिपाटी
क्षेत्रीय निदेशक/समन्वयक- क्षेत्रीय केन्द्र कानपुर
राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0

.....पृष्ठ ३२ का शेष

संदर्भ

1. वाल्मीकि रामायण 1. 2.15
2. उपाध्याय, रामबिहारी, उत्तर भारत का पुराजैव पर्यावरण, फैजाबाद 2015 पृ. 24-25, सिंह, महेन्द्र प्रताप, वाल्मीकि की पर्यावरण चेतना, भाग 2, पृ. 13-186, सिंह, महेन्द्र प्रताप, वही, भाग १. पृ 12-291
3. Joshi, M-C, some aspicts of valmiki Ramayan, maharsi Valmiki Peeth, Punjabi University Patiyala, Symposiurn held on 27-2-97 8 National Seminar held on 9-10-12-97
4. तैतिरीय प्रातिशाख्य 5/36, 9/4,18/6
5. महाभारत आदिपर्व 50/14, समापर्व 6/14, वनपर्व 83/102 उद्योगपर्व 81/87
6. राम्रो दशरथस्यैव पितुर्गे मुनि पुंगव:। सखा परमको विप्रों वाल्मीकि सुमहायशा: भाल्मीकि रामायण
उत्तर काण्ड 47/16-17
7. विष्णु पुराण 3.3.18, मत्स्य पुराण 12/51, भागवत 6/181, कुमार सम्भव 2/21
8. अध्यात्म रामायण अयोध्या काण्ड, 6142-48 स्कन्द पुराण: वैष्णव खण्ड अध्याय 21. अवन्ति खण्ड
अध्याय 24, नागर खण्ड अध्याय 124, प्रभास खण्ड आध्याय 248
9 . तुलनीय, बुल्के, कामिल, राम कथा, पृ. 46-47
10. द्रष्टव्य, उपाध्याय, रामबिहारी, प्राचीन अयोध्या का राजनैतिक एवम सांस्कृतिक अध्ययन, पू 284-286
11. दास, ए सी, ऋग्वैदिक इण्डिया, पृ 113
12. दत्त, रमेश चन्द्र, हिन्दू सम्यता का इतिहास पृ. 133
13. Wheelar, JTB: India of Brahmanic Age, part, i.p.365
14. नागरी प्रचारिणी पत्रिका अंक 3-4. सम्वत 2005, वर्ष53, पृ. 240
15. रामायणी, रामकुमार दास, अनिन्दिता, पृ. 17
16. Sircar, D-C- The Studies in the Geography of Ancient 8Medieval India, p-40,उपाध्याय, रामबिहारी, पूर्वोद्धृत पृ. 192

दिनांक,16th May,2023